ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 32 08 से 14 अगस्त, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 श्रावण शु.-02

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः, समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यंचोऽग्निं सपर्यत, अरा नाभिमिवाभितः।।
अथर्व 3.30.6

अनुशीलन – परिवार हो या समाज, उसकी समृद्धि और एकता के लिए कुछ उपायों का आश्रय लेना पड़ता है। साथ जलपान करना, साथ भोजन करना, साथ उठना–बैठना, ये ऐसे कार्य हैं, जिनसे परिवार या समाज में सद्भावना और प्रेम का वातावरण उत्पन्न होता है। साथ बैठने पर स्वाभाविक है कि परस्पर वार्तालाप हो, हँसी–मजाक हो, कुछ सुख–दुख की बातें हों। इनसे पारस्परिक स्नेह बढ़ता है, एकता की अनुभूति होती है और सामंजस्य होता है। अतएव मंत्र में कहा गया है कि जलपान–गृह और भोजन गृह एक हों, सम्मिलित हों इससे प्रेम का बन्धन पुष्ट होगा, सहानुभूति बढ़ेगी। एक दूसरे के सुख–दुख में सहभागी होंगे। धुरी में अरे ऐसे फंसे रहते हैं कि वे पृथक होते हुए भी एक केन्द्र से सम्बद्ध हैं।

ऋषि की प्रतिज्ञा

यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूँ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मत–मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी। ..... मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बंध (रोक, अवरोध) करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

"वैदिक सार्वदेशिक" का सदस्यता शुल्क

एक प्रति	:	5 रुपया
वार्षिक	:	250 रुपये
आजीवन	:	2500 रुपये

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।
– स्वामी अग्निवेश

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य
मो. :- 09849560691, 09013251500
E-mail : sarvadeshik@yahoo.co.in

केन्द्रीय श्रम मंत्री माननीय श्री शीशराम ओला जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी के साथ वार्तालाप।

स्वामी अग्निवेश जी के निमन्त्रण पर केन्द्रीय श्रम मंत्री माननीय श्री शीश राम ओला जी एवं उनके OSD श्री सतेन्द्र कुमार जी स्वामी अग्निवेश जी के कार्यालय 7, जन्तर मन्तर रोड पर 03 अगस्त, 2013 को पधारे। कार्यालय में बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो0 श्योताज सिंह, संगठन मंत्री रमेश आर्य, युवा आर्य नेता श्री मनु सिंह, जोधपुर के आर्य नेता श्री राम सिंह आर्य जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के श्री मो0 जियाउद्दीन जावेद, निर्मल गोराना एवं विष्णु पॉल एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री हिमांशु कुमार भी इस लगभग 2 घंटे चली वार्तालाप में उपस्थित थे।

स्वामी अग्निवेश जी ने इस अवसर पर माननीय शीशराम ओला जी को बधाई देते हुये उनसे श्रमिकों एवं किसानों की बिगड़ती स्थिति पर तुरन्त हस्तक्षेप करने की माँग की। इसके लिये उन्होंने ओला जी को निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किये–

1. भारत में लगभग 45 करोड़ असंगठित क्षेत्र के श्रमिक हैं जिनके लिए सरकार कभी खाद्य सुरक्षा अधिनियम लाना चाहती है तो कभी मनरेगा, मिड–डे–मील जैसी योजनाये चलाती है। इन सब पहलों की हम सराहना करते हैं किन्तु जब तक हम समस्या की जड़ में नहीं जायेंगे तब तक यह सब व्यर्थ है। हमें सिर्फ श्रमिकों को उनके काम का उचित दाम देना चाहिये जो होना चाहिये सरकार में काम कर रहे चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के बराबर यानी 500 रूपये प्रतिदिन अकुशल श्रमिक के लिए। सरकारी कार्यालय में एक चपरासी का काम सिर्फ किसी को पानी पिलाना एवं एक या दो फाइल इधर से उधर करना होता है और इसके एवज में उसे 30 साल की पक्की नौकरी एवं अन्य सुविधायें मिलती हैं।

दायें से तरुण शर्मा, हिमांशु कुमार, निर्मल गोराना, रामसिंह आर्य, केन्द्रीय श्रममंत्री श्री शीशराम ओला, सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी, श्रममंत्री के ओ. एस. डी., आर्य युवा नेता मनु सिंह, वरिष्ठ लेखाधिकारी विष्णु पॉल।

उसकी तुलना में एक श्रमिक दिन रात बदन तोड़ने वाली मेहनत करता है लेकिन उसके हाथ कुछ नहीं लगता। उसे जितना दिया जाता है उससे वह अपने परिवार के लिए दो जून के रोटी की भी व्यवस्था नहीं कर पाता। अगर हम सिर्फ काम का पर्याप्त दाम देंगे तब हमें किसी भी अन्य योजना की बैसाखी की आवश्यकता नहीं है।

2. किसानों के लिए – जब किसानों के उपज का दाम तय होता है, तब उसे तय करते समय उसमें किसान एवं किसान के परिवार की मज़दूरी का दाम भी लगना चाहिये। वैज्ञानिक रूप से खेती एक कुशल कला है इसीलिये किसानी को अकुशल कारीगर के पैमाने से नहीं अपितु कुशल कारीगर के रूप में माना जाना चाहिये और उनके फसल की लागत में किसान की मेहनत तृतीय श्रेणी के कर्मचारी के वेतन रू. 850 प्रतिदिन के हिसाब से लगाकर अनाज, गन्ने, कपास आदि का मूल्य तय किया जाय।

3. अंतिम एवं सबसे मौलिक सुझाव – पूरे देश में श्रमिकों एवं किसानों के साथ–साथ भारत की सभ्यता की रक्षा करने के लिये यह अति आवश्यक है कि तुरन्त प्रभाव से शराब बंदी लागू की जाये। शराब वह कुरीति है जिसकी वजह से किसानों एवं श्रमिकों के परिवार टूट जाते है एवं दाने दाने के लिए मोहताज हो जाते है। सरकार का शराब के व्यापार में पड़ना देश एवं देश के संविधान का अपमान है एवं देश की जनता के साथ धोखा है।

माननीय श्री शीश राम ओला जी ने स्वामी जी के विचारों को ध्यान पूर्वक सुना एवं कहा कि वह उनकी बातों से पूर्णतः सहमत है–किसी अन्य से अधिक क्योंकि वह खुद किसान के बेटे हैं और एक आर्य समाजी परिवार से हैं। उन्होंने इस बात की पुष्टि करते हुए सबकों अपने दायें हाथ की ऊँगली भी दिखायी जो चारा काटते समय तीन जगह से कटी थी। हॉलांकि उन्होंने कहा कि मोटे तौर पर इन सब मुद्दों पर सरकार में इच्छा शक्ति का अभाव है परन्तु वह पूर्ण कोशिश करेंगे कि स्वामी जी की बातों को लागू किया जा सके।

स्वामी अग्निवेश जी ने किया मानव संसाधन विकास मंत्री श्री शशि थरूर से वैदिक मूल्यों को बढ़ाने का आग्रह

नई दिल्ली, 07 अगस्त, 2013 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी एंव युवा आर्य नेता श्री मनु सिंह ने मानव संसाधन विकास मंत्री श्री शशि थरूर से उनके कार्यालय पर मुलाकात की। इस अवसर पर स्वामी जी ने शशि थरूर जी को मंत्री पद संभालने के लिए आधिकारिक रूप से बधाई दी। स्वामी जी ने इस अवसर पर अपने हृदय की वेदना शशि थरूर जी से बाँटी–उन्होंने भारतीय सामाजिक पतन एवं तेजी से गिरते जा रहे राष्ट्रीय चरित्र के लिए सीधे–सीधे शिक्षा में मूल्यों की कमीं को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि जब तक हम शिक्षा में वेद एवं उपनिषदों में वर्णित मानव मात्र के कल्याण के लिए आध्यात्मिक मूल्यों को नहीं लायेंगे तब तक कोई भी मौलिक परिवर्तन हमें समाज में नहीं दिखेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि एन0सी0ई0आर0टी0 की या सी0बी0एस0ई0 की किसी एक भी पुस्तक में शराब एवं तम्बाखू के खिलाफ या मांसाहार के खिलाफ एक भी शब्द नहीं है न ही समाज की अन्य कुरीतियों के खिलाफ जैसे जातिवाद, कन्याभ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड के बारे में कोई पाठ है। शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्य छात्रों के जीवन में पुष्पित एवं पल्लवित करना होना चाहिये न कि शिक्षार्थियों को पैसा कमाने की अंधी दौड़ में उतारना। इस प्रकार की शिक्षा के कारण से खोखली जीवन शैली, मूल्यहीन बाजारवाद की संस्कृति का बोलबाला आज भारत में बढ़ता जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी जी ने अपनी पुस्तक "Applied Spirituality" भी शशि जी को भेंट की जिसे स्वीकार कर शशि जी अति प्रसन्न हुए। साथ ही साथ स्वामी जी ने सर्वधर्म संसद एवं आर्य समाज के कार्यों का लेखा जोखा भी शशि जी को दिया।

क्या यही हमारा राष्ट्रीय चरित्र नहीं है?

– डॉ. अमित कुमार सिंह

भारत के धार्मिक ट्रस्टों के पास अरबों की घोषित अघोषित सम्पत्ति है, लेकिन किसी भी ट्रस्ट ने अपने खजाने का मुँह इन पीड़ितों के लिए नहीं खोला। सभी धार्मिक ट्रस्ट साँप की तरह इस खजाने में कुंडली मारकर बैठे रहे। कब काम आयेगा, यह खजाना?यह खजाना आखिरकार किसके लिए है?क्या अधिकांश धार्मिकों और धार्मिक संस्थाओं का चरित्र ऐसा ही उदासीन एवं स्वार्थपूर्ण नहीं है?

शास्त्रों में उल्लखित है कि मित्र, नारी और रिश्तेदारों की असली परीक्षा विपत्ति के समय होती है। यही बात, राष्ट्र पर भी लागू होती है। संकट के समय में, लोक व्यवहार को देखकर राष्ट्रीय चरित्र एवं चेतना की गहराई और ऊँचाई को आसानी से समझा जा सकता है।

आइये! उत्तराखण्ड की प्राकृतिक त्रासदी में, राजनीतिज्ञों, संतों, नौकरशाहों और पूँजीपतियों के चाल, चिंतन और चरित्र की चर्चा करते हैं। उत्तराखण्ड में केन्द्र एवं राज्य सरकार की विफलता को छोड़कर, इस दौरान हुए घटनाक्रम और बयानबाजी से बात शुरू करते हैं।

उत्तराखण्ड में राहत अभियान के संदर्भ में, केन्द्रीय गृहमंत्री सुशील शिंदे का बयान आया कि वीआईपी लोगों के आने से राहत कार्य प्रभावित होता है। इसके अगले ही दिन, गृहमंत्री के इस बयान का मजाक उड़ाते हुए कांग्रेस के उपाध्यक्ष राहुल गांधी उत्तराखण्ड पहुँच गए और यह साबित कर दिया कि यहाँ गृहमंत्री, उनका बयान और उनके द्वारा लागू किया गया कानून कमजोर, निरीह और निस्तेज होता है और व्यक्तिगत निष्ठा, राजनीतिक चापलूसी और दलीय प्रतिबद्धता सर्वोच्च और महत्त्वपूर्ण होती है।

यही नहीं, नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरातियों को बचाने के सम्बन्ध में, पक्ष–विपक्ष द्वारा जो टीका–टिप्पणी का दौर चला, उससे यह साबित हो गया कि यहाँ के अधिकांश राजनीतिज्ञों की उत्सुकता, प्रवीणता और कर्मठता बयानबाजी तक सीमित है, अन्यथा यह समय था चुपचाप कंधे से कंधा मिलाकर साथ चलने का। ज्ञातव्य है कि अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव से पूर्व आए तबाही के मंजर के समय, अमेरिका में दोनों राजनीतिज्ञ दलों के मध्य समझदारी, सहयोग और संवेदनशीलता दिखाई दी थी। भारत में यह स्वस्थ लोकतान्त्रिक परम्परा और समझदारी नदारत थी।

स्वस्थ राजनीतिक चरित्र की कमी केवल भाजपा और कांग्रेस तक सीमित रहती, तो भी अमानवीय है। उत्तराखण्ड के कैबिनेट मंत्री डॉ. हरेक सिंह रावत और विधायक सुबोध उनियाल राहत में लगे हेलिकॉप्टर से राहत सामग्री निकलवाकर हेलिकॉप्टर की सैर में निकल पड़े। प्रदेश के परिवहन मंत्री सुरेन्द्र राकेश और केदारनाथ के विधायक शैला रानी रावत भी हेलिकॉप्टर की मुफ्त सरकारी सेवा का आनन्द उठाने से स्वयं को नहीं रोक पाये। यह कारनामा इस संकट की घड़ी में दिखाया गया। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि सामान्य स्थिति में ये जनप्रतिनिधि जनता के प्रति कितना गम्भीर, मानवीय और संवेदनशील रहते होंगे?यह चरित्र समूचे भारत के अधिकांश राजनीतिज्ञों में देखा जा सकता है।

आइये! अब संतों की बात करते हैं। आखिरकार, भारत एक महान धार्मिक और आध्यात्मिक देश है। उत्तराखण्ड का संकट खत्म भी नहीं हो पाया था, परन्तु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती और केदारनाथ के पुजारी रावल भीमशंकर लिंग आपस में बच्चों की तरह उलझ पड़े। शंकराचार्य ने पुजारी रावल को नौकर बताया, तो पुजारी रावल ने उनकी धार्मिक सत्ता को मानने से इंकार कर दिया। यह वही पुरानी अहंकार की लड़ाई थी, जिससे राजनीतिज्ञ ग्रस्त पाये जाते हैं। शीर्ष स्तर पर यह ओछापन धार्मिक क्षेत्र में भी दिखाई पड़ा। इस समय में छोटे–मोटे साधुओं का हाल भी बुरा ही रहा है। केदारनाथ के पास बैंक के मलवे से एक लॉकर मिला। यह बेईमान साधुओं के हाथ लग गया। तत्पश्चात् बारह साधु चौरासी लाख रुपये के साथ पकड़े गये। वे अपनी पगड़ी और वस्त्र में इन नोटों को छुपाकर भाग रहे थे। आम जनता इन्हीं साधुओं को श्रद्धा देती है और वे ऐसे कुकृत्य करते पकड़े गये। भारत के धार्मिक ट्रस्टों के पास अरबों की घोषित अघोषित सम्पत्ति है, लेकिन किसी भी ट्रस्ट ने अपने खजाने का मुँह इन पीड़ितों के लिए नहीं खोला। सभी धार्मिक ट्रस्ट साँप की तरह इस खजाने में कुंडली मारकर बैठे रहे। कब काम आयेगा, यह खजाना?यह खजाना आखिरकार किसके लिए है?क्या अधिकांश धार्मिकों और धार्मिक संस्थाओं का चरित्र ऐसा ही उदासीन एवं स्वार्थपूर्ण नहीं है? इस दौरान, दन दिनों तक योगगुरु रामदेव गायब रहे। उत्तराखण्ड में सस्ती और सरकारी भूमि का दोहन करके आज वे अरबों रुपये के एक कारोबारी, ब्राण्ड और सीईओ बन गये हैं। ऐसे संकट की घड़ी में वे अपने मजबूत संगठन, समर्पित कार्यकर्ता और प्रचुर संसाधनों के द्वारा पीड़ितों का सहयोग कर सकते थे, लेकिन वे दस दिनों तक कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे।

परन्तु एक सवाल यह भी उठता है कि समाज इन राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, संतों, सेलेब्रेटियों और पूँजीपतियों को इतना सम्मान क्यों देता है?यह हमारी सामाजिक चेतना का एक गम्भीर संकट है। चीनी संत लाओत्से कहता है कि जिसका समाज में सम्मान होता है, वही प्रवृत्ति, गुण और उत्कृष्टता समाज में विकसित होती है। क्या भारत जैसे आध्यात्मिक देश को इस बिन्दु पर ईमानदारी और साहस से चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं है कि हम धन, पद और यश का इतना सम्मान क्यों कर रहे हैं और सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, उदारता, दया और सामूहिकता जैसी उदात्त और मानवीय मूल्यों को इतना नजरअंदाज क्यों करने लगे हैं?

प्रशासन की लेट लतीफी तो जगजाहिर ही है, लेकिन शीर्ष स्तर पर प्रशासनिक चरित्र की एक बानगी प्रस्तुत है। उत्तराखण्ड की प्राकृतिक आपदा के करीब आठ दिनों के उपरान्त, राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबन्धन की एक बैठक हुई। इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं। इसमें केन्द्र और राज्य के शीर्ष अधिकारियों के अतिरिक्त सेना के तीनों अंगों के प्रतिनिधि भी शामिल थे। क्या इस बैठक का आयोजन आठ दिन पहले नहीं हो सकता था?अब संचार की अत्याधुनिक उपलब्धता है, फिर भी देरी! दरअसल, यही हमारा प्रशासनिक चरित्र है।

अब सेलेब्रेटियों की कुछ बात करें। सेलेब्रेटी भी राजनीतिज्ञों की तरह स्वयं को आम जनता का प्रतिनिधि मानते हैं। अमिताभ बच्चन जैसा सेलेब्रेटी, जो ट्विटर में यह भी लिखता है कि कल रात उसके घर में चोर आए थे और दो हजार रुपया का सामान चुराकर ले गए, ऐसे गम्भीर संकट के समय कोई भी संवेदना प्रकट नहीं की, सहायता तो दूर रही। यही हाल सभी सेलेब्रेटियों का रहा। इसी दौरान, भारत चैम्पियंस ट्राफी विजेता बना। गोल्डन बैट पाने वाले शिखर धवन ने यह पुरस्कार उत्तराखण्ड पीड़ितों को समर्पित किया। उनके अतिरिक्त किसी भी खिलाड़ी ने यह दरियादिली नहीं दिखाई। कप्तान धोनी का जन्म स्थल उत्तराखण्ड है और विराट कोहली की तरह वे भी 100 करोड़ के विज्ञापन राशि के मालिक हैं, अन्य कमाई की बात छोड़िए, लेकिन इन सेलेब्रेटी खिलाड़ियों ने भी उत्तराखण्ड में पीड़ितों की सुध नहीं ली। दरअसल सेलेब्रेटी भी आम आदमियों की खाते हैं और पूँजीपतियों की गाते हैं। राष्ट्र के स्थान पर व्यक्तिगत धन, यश और प्रतिष्ठा उनका अन्तिम ध्येय है। आश्चर्य, जनता फिर भी इनके पीछे पागल और दीवानी है। क्रिकेट भारत का राष्ट्रीय धर्म और फैशन बन गया है और बीसीसीआई पैसे कमाने की एक मशीन।

बीसीसीआई दुनिया के सबसे धनी खेल संस्थानों में गिनी जाती है, लेकिन इस दौरान बीसीसीआई मौन रही। उनका चैम्पियन्स ट्राफी विजेता भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों को एक–एक करोड़ रकम का पुरस्कार देना, जले पर नमक छिड़कने जैसा रहा। बीसीसीआई स्वयं को निजी संस्था घोषित करती है और भारत की राष्ट्रीय टीम को संचालित करती है। पता नहीं, यह कैसा कानून और कायदा है?खैर, यह विषयांतर हो जायेगा।

इस संकट के दौरान, एक प्राइवेट उड्डयन कम्पनी द्वारा तीन लाख लेकर उत्तराखण्ड में फँसे लोगों को बचाने का एक सनसनीखेज खुलासा हुआ है। ऐसे कितने पूँजीपति इस संकट में तिजोरी भर रहे होंगे, इस सम्बन्ध में अनुमान लगाया जा सकता है?देश के बड़े–बड़े उद्योगपतियों और औद्योगिक घरानों में से किसी ने भी इस दौरान अपने राष्ट्रीय और सामाजिक दायित्व का निर्वहन नहीं किया।

परन्तु एक सवाल यह भी उठता है कि समाज इन राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, संतों, सेलेब्रेटियों और पूँजीपतियों को इतना सम्मान क्यों देता है?यह हमारी सामाजिक चेतना का एक गम्भीर संकट है। चीनी संत लाओत्से कहता है कि जिसका समाज में सम्मान होता है, वही प्रवृत्ति, गुण और उत्कृष्टता समाज में विकसित होती है। क्या भारत जैसे आध्यात्मिक देश को इस बिन्दु पर ईमानदारी और साहस से चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं है कि हम धन, पद और यश का इतना सम्मान क्यों कर रहे हैं और सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, उदारता, दया और सामूहिकता जैसी उदात्त और मानवीय मूल्यों को इतना नजरअंदाज क्यों करने लगे हैं?

– लेखक आर. एस. पी. जी. कॉलेज, धामपुर में राजनीतिशास्त्र के प्रवक्ता हैं।
(नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार) से साभार

गनीमत थी। महाराष्ट्र में राष्ट्रीय क्रान्ति दल के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार से मिलने उत्तराखण्ड में फँसे महाराष्ट्र के श्रद्धालुओं के परिवारजन गए। वे चार घण्टे तक उनका इंतजार करते रहे, लेकिन अजीत पवार उनसे बिना मिले चले गये।

उत्तराखण्ड के मंत्रियों और विधायकों की संवेदनहीनता का किस्सा भी रोचक किन्तु

सार्वभौम मानवीय एकता कैसे हो?

जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्धवाद न छूटेगा, तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या, द्वेष छोड़, सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें, तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्याना का नया रूप–जनदक्षेस

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (दक्षेस) याने 'सार्क' को बने 28 साल हो गए लेकिन अभी तक इस संगठन के आठ देशों के बीच न तो मुक्त व्यापार शुरु हुआ है, न मुक्त–यात्रा और न ही मुक्त परिवहन की सुविधाएँ खड़ी हो सकी हैं। ऐसे में साझा संसद, साझा बाजार, साझा मुद्रा, साझा महासंघ की बात कौन कहे?सात देशों ने मिलकर 'दक्षेस' शुरु किया था। भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, भूटान और मालदीव। इन सात देशों में अब तक सिर्फ एक नया सदस्य जुड़ा है। वह है, अफगानिस्तान ! इसी क्षेत्र के ईरान और बर्मा (म्यांमार) अभी जुड़ना बाकी हैं। इनके अलावा मध्य–एशिया के पाँचों गणतंत्र–उज़बेकिस्तान, कजाकिस्तान, किर्गीजिस्तान, ताज़िकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान – को भी इस संगठन से जोड़ने की कोई कोशिश अभी तक नहीं हुई है। यदि ये सब देश भी जुड़ जाएँ तो दक्षेस के सदस्यों की संख्या 15 हो जाएगी। ये सभी देश हजारों वर्षों तक 'आर्याना' के नाम से जाने जाते रहे हैं।

अब जरा कल्पना कीजिए कि इन 15 राष्ट्रों का संगठन कैसे होगा?दक्षिण और मध्य एशिया के इन 15 राष्ट्रों का शक्ति–संभाव्य दुनिया के किसी भी क्षेत्रीय संगठन से ज्यादा शक्तिशाली होगा। इन 15 राष्ट्रों की जनसंख्या लगभग डेढ़ अरब होगी और इनका क्षेत्रफल यूरोपीय संघ से कई गुना बड़ा होगा। ये राष्ट्र तेल, गैस, सौर–ऊर्जा और पन–बिजली के अकूत भंडार हैं। अकेले अफगानिस्तान में इतना लोह–अयस्क है कि संपूर्ण दक्षिण एशिया की जरुरत को वह सौ–दो साल तक पूरा कर सकता है। नेपाल और भूटान की पन–बिजली दक्षिण एशिया के हर घर को रोशन कर सकती है। इस इलाके के राष्ट्रों की ज़मीन इतनी उपजाऊ है कि उसके खाद्यान्न, फल–फूलों और पशुधन से एक–एक व्यक्ति को श्रेष्ठतम पोशण सामग्री मिल सकती है। यदि इन 15 राष्ट्रों में मुक्त आर्थिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का वातावरण बन जाए तो मेरी पक्की राय है कि अगले पाँच वर्षों में इस क्षेत्र की गरीबी दूर हो सकती है और अगले 10 वर्षों में एशिया का यह हिस्सा यूरोप से भी अधिक समृद्ध, सुखी और सुरक्षित हो सकता है।

तो पिछले 65 वर्षों में ये राष्ट्र क्या करते रहे?इस क्षेत्रीय एकता का काम आगे क्यों नहीं बढ़ा?इसका सबसे बड़ा कारण हमारे नेताओं की दीमागी गुलामी थी। वे अपने दिलो–दिमाग को अपने अंग्रेज स्वामियों के साथ जोड़े हुए थे मध्य–एशिया के पाँचों गणतंत्र रुस के शिकंजे में थे। भारत और पाकिस्तान जैसे बड़े देशों के नेता अपने आस–पड़ोस के 'छोटे–मोटे' देशों की बजाय दुनिया की महाशक्तियों के साथ पींगे भरने में मशगूल थे। उन्होंने विश्वयारी के चक्कर में पड़ोसियों की उपेक्षा की अपने पड़ोस के एशिया को जोड़ने की बजाय वे गुट–निरपेक्षता की हवाई नेतागिरी में उलझे रहे। अब यह जो 'दक्षेस' बना है, यह भी घोंघा गति से क्यों चल रहा है?क्या इसकी गति तेज नहीं हो सकती?क्या हमारे नेताओं को विश्व–राजनीति की घंटियों का निनाद सुनाई नहीं पड़ रहा?

सरकारों और नेताओं की अपनी सीमा होती है। सिर्फ उनके मत्थे दोष मढ़ देना ठीक नहीं है। वे सरकार के नेता होते हैं, समाज के नहीं। हम यह न भूलें कि एशियाई राष्ट्रों में आज भी सरकारों के बदले समाज कहीं अधिक शक्तिशाली है। दक्षेस या सार्क एक सरकारी संगठन है। आठ राष्ट्रों के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री हर साल इकट्ठे होकर एक औपचारिक कर्मकांड करते हैं, भाषण देते हैं, प्रस्ताव पारित करते हैं और घर चले जाते हैं। काठमांडो स्थित सचिवालय इस गाड़ी को ठेलता रहता है। गाड़ी कुछ आगे जरुर बढ़ती है लेकिन उसके पीछे जनता का धक्का नहीं होता है। जन–दबाव का अभाव ही दक्षेस की शिथिलता का मूल कारण है।

पिछले माह अपने पाकिस्तान–प्रवास के दौरान वहाँ के नए और पुराने प्रधानमंत्रियों तथा विपक्षी नेताओं से बातचीत करते हुए मेरे मन में यह धारणा पक्की हो गई कि सिर्फ दक्षेस से काम चलनेवाला नहीं है। हमें जन–दक्षेस खड़ा करना होगा। ऐसा संगठन जो 15 पड़ोसी राष्ट्रों के करोड़ों लोगों के बीच सीधे संपर्क का सेतु बने। साल में कम से कम एक बार सभी 15 देशों के हजारों नागरिक किसी एक देश में इकट्ठे हों, एक–दूसरे के घरों में रहें, पारस्परिक आत्मीयता कायम करें और संगोष्ठियों में उन सब मुद्दों पर चर्चा करें, जिनसे क्षेत्रीय आवागमन, परिवहन, व्यापार, पूंजी विनियोग, रोजगार, शिक्षा आदि के साझे दरवाजे खुलें। हजारों नागरिकों में यह सीधा संपर्क इस जन–दक्षेस के संपूर्ण भद्रलोक में एक नई दृष्टि और नई सृष्टि का संचार करेगा। अब से लगभग 10 वर्ष पहले जब जन–दक्षेस की इस अवधारणा को मैंने ढाका के एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया तो बांग्लादेश के अनेक अखबारों ने इसका गर्मजोशी से स्वागत किया। बांग्ला विदेश मंत्री ने उसका मुख्यालय ढाका में ही स्थापित करने की पेशकश भी की।

इस महान लक्ष्य को प्राप्त करने का यह सही समय है। पाकिस्तान और भूटान में नई सरकारें आ गई हैं। नेपाल और मालदीव में भी कुछ ही हफ्तों में नया निजाम आनेवाला है। साल भर में ही भारत, अफगानिस्तान और बर्मा में सत्ता–परिवर्तन होगा। मध्य एशिया के गणराज्यों में फिलहाल बहुत उथल–पुथल नहीं है। जन–दक्षेस का पहला काम तो यही होगा कि जिन सात राष्ट्रों की सरकारें दक्षेस में नहीं हैं, उनकी जनता को अपने से जोड़े। जब इन 15 राष्ट्रों के हजारों प्रमुख नागरिक किसी मांग का समर्थन करेंगे तो ढुलमुल सरकारों के हाथ मजबूत होंगे। कभी–कभी नेतागण अनजाने ही या अहंकारवश अपने पड़ोसी राष्ट्रों की उचित मांगों का भी विरोध करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में जन–दबाव उन्हें सही पटरी पर लाएगा।

यदि ये 15 राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय मामलों पर लगभग एक–जैसी राय रखने लगेंगे तो महाशक्तियों की दुरभिसंधियाँ अपने आप फीकी पड़ जाएंगी। इन राष्ट्रों को आपस में लड़ाकर अपनी गोटी गर्म करने की पुरानी नीति बेकार हो जाएगी। सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि जनता से जनता की घनिष्ठता के कारण युद्ध के बादल हमेशा के लिए छंट जाएंगें। अरबों रुपयों का खर्च हर साल बचेगा। इस पैसे का इस्तेमाल गरीबी दूर करने में होगा।

एशिया या भारत के इन 15 पड़ोसी राष्ट्रों की सभ्यता और संस्कृति में जितनी गहरी और प्राचीन एकता है, उतनी यूरोपीय संघ के राष्ट्रों में नहीं है। यह हम पर निर्भर है कि हम हमारी इस बुनियादी सांस्कृतिक एकता की माला में हमारे आर्थिक और राजनीतिक हितों के मोतियों को कैसे पिरो सकते हैं।

(लेखक, भारतीय विदेश नीति परिषद् के अध्यक्ष हैं)
– 242, सेक्टर 55, गुड़गांव–122011, फोन : 0091–0124–405–7295
मो. 98–9171–1947
e-mail : dr.vaidik@gmail.com

सबसे युवा देश का क्लेश

– कृष्ण प्रताप सिंह

इस सच्चाई में शक की फिलहाल कोई गुंजाइश नहीं है कि हमारी वर्तमान जनसंख्या का सबसे बड़ा हिस्सा युवाओं का है और इस कारण हम भविष्य की दृष्टि से दुनिया के सबसे ज्यादा संभावनाओं वाले देश हैं। हमारे सारे युवाओं की ऊर्जा, उत्साह व उमंग का सृजनात्मक उपयोग हो तो कोई भी आशंका देश के भविष्य को आक्रांत नहीं कर सकती, लेकिन हम ऐसा नहीं कर पा रहे तो क्या इसका कारण यह नहीं है कि भूमंडलीकरण के नाम पर शोषण व गैरबराबरी पर आधारित जो अमानवीय व्यवस्था देश पर थोप दी गई है, उसकी दूषित चेतनाओं ने हमारे रोल मॉडल समझे जाने वाले युवकों तक को आकांक्षा व प्रतीक्षा के 'आप आप ही चरे' वाले हवस के ऐसे द्वंद्वमें फंसा दिया है जिससे मुक्त हुए बिना वे अपने देश व समाज के लिए कोई सार्थक भूमिका निभा ही नहीं सकते?

इसका एक ताजा उदाहरण है। विश्व के 'सर्वश्रेष्ठ' बिजनेस स्कूलों में 'ऊँची' पढ़ाई के लिए विदेश गए जो छात्र साल भर पहले पढ़ाई पूरी होते ही स्वदेश यानी भारत लौटने को उतावले थे, उनमें से

राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में ये छात्र देश के लिए नहीं, सिर्फ अपने लिए चिंतित है। इसलिए उनके तर्क बदल गए हैं। अब भारत लौटने में उन्हें कोई लाभ नहीं दिख रहा। वे कह रहे हैं कि 2010–11 में उन्होंने नामांकन कराया तो भारत की जीडीपी वृद्धि दर साढ़े आठ प्रतिशत थी और एक डॉलर केवल 48 रुपयों का था। अपनी पढ़ाई के लिए उन्होंने डॉलर में जो बड़ा कर्ज लिया है, उसकी सुविधाजनक अदायगी के मद्देनजर यह स्थिति स्वदेश वापसी के बहुत अनुकूल थी, लेकिन अब जरूरी है कि भारत आकर रुपया कमाने और कर्ज के एक डॉलर के लिए 61 से ज्यादा रुपये देने की बजाय विदेश में ही रहकर डालर कमाएं। साफ है कि उनके लिए भारत व अमेरिका में कोई भी देश अपना या पराया नहीं है। वे इस पारम्परिक बहस में भी नहीं पड़ना चाहते कि भारत आकर 'स्वदेश' की ठीक–ठाक सेवा कर सकेंगे या विदेश में डॉलर कमाकर उसकी बढ़ती हुई माँग पूरी करके। सिर पर चढ़कर बोल रहे निजी लाभ के लिए उन्होंने ब्रेनड्रेन की तर्ज पर नया शब्द गढ़ लिया है – ब्रेन सर्कुलेशन, जिसका अर्थ है कि जिधर भी लाभ के अवसर दिखें ब्रेन को उधर ही सर्कुलेट किया जाने लगे।

ज्यादातर अब लौटना ही नहीं चाहते। हॉर्वर्ड के 25 में से 10 और व्हार्टन के पचास छात्रों में से 4–5 लौटना भी चाहते हैं तो व्यक्तिगत कारणों से। बाकी वहीं 'सेटिल' होने के फेर में हैं और इस हेतु उनकी पहली पसंद अमेरिका है। कारण?साल भर पहले अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मंदी का दौर था और नौकरियों के अवसर घटते जा रहे थे जबकि भारत के बारे में कहा जा रहा था कि उसकी अर्थव्यवस्था ने मंदी के आक्रमणों को नाकाम कर दिया है और उनके कुप्रभावों से बाहर आने में सफल रही है। तब बड़े–बड़े पैकेजों को अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानने वाले इन छात्रों को 'अपना देश' बहुत प्यारा लग रहा था। वे ब्रेनड्रेन की पुरानी अवधारणा को पलटकर रख देने के जोश से भरे हुए थे।

लेकिन अब?अमेरिकी अर्थव्यवस्था थोड़ी संभली है, जबकि भारत की अर्थव्यवस्था अपनी चमक खोकर खस्ताहाल हो गई और गहरे संकट से जूझने लगी है। राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में ये छात्र देश के लिए नहीं, सिर्फ अपने लिए चिंतित है। इसलिए उनके तर्क बदल गए हैं। अब भारत लौटने में उन्हें कोई लाभ नहीं दिख रहा। वे कह रहे हैं कि 2010–11 में उन्होंने नामांकन कराया तो भारत की जीडीपी वृद्धि दर साढ़े आठ प्रतिशत थी और एक डॉलर केवल 48 रुपयों का था। अपनी पढ़ाई के लिए उन्होंने डॉलर में जो बड़ा कर्ज लिया है, उसकी सुविधाजनक अदायगी के मद्देनजर यह स्थिति स्वदेश वापसी के बहुत अनुकूल थी, लेकिन अब जरूरी है कि भारत आकर रुपया कमाने और कर्ज के एक डॉलर के लिए 61 से ज्यादा रुपये देने की बजाय विदेश में ही रहकर डालर कमाएं। साफ है कि उनके लिए भारत व अमेरिका में कोई भी देश अपना या पराया नहीं है। वे इस पारम्परिक बहस में भी नहीं पड़ना चाहते कि भारत आकर 'स्वदेश' की ठीक–ठाक सेवा कर सकेंगे या विदेश में डॉलर कमाकर उसकी बढ़ती हुई माँग पूरी करके। सिर पर चढ़कर बोल रहे निजी लाभ के लिए उन्होंने ब्रेनड्रेन की तर्ज पर नया शब्द गढ़ लिया है – ब्रेन सर्कुलेशन, जिसका अर्थ है कि जिधर भी लाभ के अवसर दिखें ब्रेन को उधर ही सर्कुलेट किया जाने लगे।

2011–12 में अमेरिकी विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों की संख्या एक प्रतिशत घटकर एक लाख दो सौ सत्तर हो गई। इससे पहले के साल में यह एक लाख तीन हजार आठ सौ पंचानवे थी और उससे भी पहले के साल में एक लाख चार हजार आठ सौ सैंतालीस। अमेरिकी विद्वानों की मानें तो इस घटत के पीछे भारत में कई अच्छे शिक्षा संस्थानों का उपलब्ध हो जाना है, लेकिन यह खबर इसको गलत सिद्ध करती है कि भारत में इस साल की प्रवेश परीक्षा में सफल आईआईटी के 769 छात्रों ने इसलिए प्रवेश नहीं लिया, क्योंकि नए खुले आईआईटीज पर उन्हें भरोसा नहीं है, फैकल्टी से जुड़ी बातों को लेकर वे शंकालु हैं और मन मुताबिक स्ट्रीम नहीं पा सके हैं। यहाँ लाख छिपाने पर भी यह बात छिपती नहीं कि

जिस निजीकरण ने शिक्षा संस्थानों के प्रति इतनी अविश्वसनीयता पैदा की है, उसने छात्रों की सोच पर भी असर डाला है। उनमें से अधिकांश सारी चीजों को निजी नफे–नुकसान के तराजू पर ही तौलने लगे हैं।

इस व्यवस्था के रहते उनसे हमारे लोकगीतों की उन नायिकाओं जैसी वफादारी या प्रेम की उम्मीद की ही नहीं जानी चाहिए जिन्हें अपने सपनों के राजकुमार की कुरिया का मोल अपार दिखाई देता है और जिसके लिए वे रंगमहलों के आमोद–प्रमोद के नाना प्रलोभन को ठुकरा देती हैं – रंगमहल में तो आगि लगावौं रे, कुरिया कै मोल अनमोल! कोई राजपूत उन पर डोरे डालने आता और उनके राजकुमार की हेठी करके डींगे मारने लगता है तो उनका उत्तर होता है – अस रजपुतवा जौ पाइत, चाकर बनाइत हो, अपने प्रभु जी के पाँव के पनहिंयाँ त ओसे ढोवाइत हो।

नई व्यवस्था में जब वफादारी व प्रेम की नई परिभाषाएँ लिखी जा रही हैं तो यह कैसे हो सकता है कि देशप्रेम को बख्शकर उसकी पुरानी परिभाषा ही चलती रहने दी जाए?कभी दुनिया भर के मजदूरों के एक होने की बात कही जाती थी। पर अब दुनिया भर में पूंजी व उसके कारिंदे एक हो रहे हैं और श्रम के पांवों में बेड़ियाँ डाल दी गई हैं। अकारण नहीं है कि हमारे कई आर्थिक घराने भारी घोटाले देश में और भारी निवेश विदेश में कर रहे हैं। विदेश में वे कम्पनियों का अधिग्रहण तक कर रहे हैं और देश के समाचार माध्यमों में उनके साथ ही अभिजन वर्ग की अनेकानेक विजयगाथाएँ पसरी हुई हैं, लेकिन हमारे प्रधानमंत्री को अपनी अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए विदेशी निवेश का मुंह जोहने के अलावा कोई रास्ता ही नहीं सूझता। कभी अमेरिका में संपन्नता की तलाश में गए सिखों की अपने अलग देश की हवस ने हमें खालिस्तान की आग में झोंका था अब विदेशी बिजनेस स्कूल संकट की घड़ी में हमारे ही श्रेष्ठतम दिमागों को हमसे विमुख कर रहे हैं।

– हरिभूमि से साभार

The Great Debate between Vegetarians and Dead body eaters (Non vegetarians) Part-II

- Manu Singh

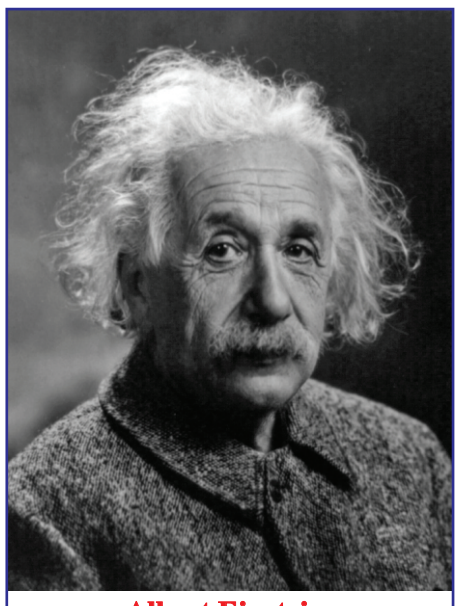

**Albert Einstein-
A staunch supporter of veganism**

Adil Zamir Khan

Human Nature:

The reason for the overwhelming practice of eating flesh is that it is in the human nature to eat it. Proof of it is to be found in the canine teeth to be found in the human mouth, which teeth are only to be found in the carnivorous animals, and in the juices which flow in the human stomach [i.e., pepsin], the intestines and other organs of the digestive system. It is true that there are also in the human mouth the teeth to be found among the vegetarian animals. But that goes to show the fact God, the Great and Wise Creator, intended man to eat both the animal flesh and the vegetables.

Medical Reasons:

Proteins are the most important need of the human body. And animal proteins are the best and most easily assimilable proteins. The system within the human body for the assimilation of the proteins is very complicated and elaborate. Ask any impartial doctor and he will tell you that proteins from animal flesh are the most easily digested and assimilated proteins of all. Besides, there are important vitamins, minerals and enzymes to be found in animal flesh, which in fact help in the assimilation of proteins drawn from the same flesh.

Effect on Character:

That food affects human character is now beginning to be realised by those doing medical research in the West — particularly in America. Meat gives courage and stamina to human beings, as shown by history also that meat eating nations are the bravest. Even in this sub-continent the Rajputs, Gurkhas, and Marathas, who have been the best soldiers among the Hindus, are meat-eaters.

Economic Reasons:

Animals out-number human beings. And if they are not eaten at the proper time they become, when old and unfit for active work, a drag and a drain on human economy. Apart from the high cost of maintaining them when they give neither milk nor service, they require for grazing areas badly needed by human beings to grow their own food. I was once in charge of a district in the Bombay Presidency, which was overwhelmingly Hindu. It was stricken with famine, after the failure of the monsoon, and human beings and animals both suffered quite unnecessarily. There was no grass for the animals and no food for the human beings. Both suffered the agonies of starvation. Government rushed some food for the human beings, but they could not at the same time find transport or fodder for the animals which suffered agonies of thirst (for there was insufficient water, too, because of the drought) and hunger before dying a slow and cruel death. The human beings also suffered more or less permanent damage to their health. Now had they eaten the animals they could not maintain, they would have saved the latter months of suffering and agony before they died in any case, and also saved themselves permanent damage to health and efficiency, unnecessary suffering and even death.

Even in normal times if the animals were not eaten they would soon outnumber human beings, and be a nuisance, if not a menace, to them. In any case, there are certain areas of the world where there are no vegetables, in fact no vegetation, such as the vast deserts in all continents, and the icebound north and south poles. If no meat were allowed to be eaten there, nearly one-third of the human race would become extinct.

A pictorial diagram that clearly defines the differences between a human's teeth fit for the consumption of plants and a Carnivore's teeth (Lion) that are designed to tear flesh.

	Herbivore	Carnivore	Omnivore	Human
Facial Muscles	Well-developed	Reduced to allow wide mouth gape	Reduced	Well developed
Jaw Type	Expanded angle	Angle not expanded	Angle not expanded	Expanded angle
Jaw Joint Location	Above the plane of the molars	On same plane as molar teeth	On saome plane as molar teeth	Above the plane of the molars
Jaw motion	No shear; good side-to-side, front-to-back	Shearing; minimal side-to-side	Shearing; minimal side-to-side	No shear; good side-to-side, front-to-back
Major Jaw Muscles	Masseter and pterygoids	Temporalis	Temporalis	Masseter and pterygoids
Mouth Opening vs Head Size	Small	Large	Large	Small
Teeth (Incisors)	Broad, flattened and spade shaped	Short and pointed	Short and pointed	Broad, flattened and spade shaped
Teeth (Canines)	Dull and short or long (for defense) or none	Long, sharp and curved	Long, sharp and curved	Short and blunted
Teeth (Molars)	Flattened with cusps vs complex surface	Sharp, jagged and blade shaped	Sharp blades and/or flattened	Flattened with nodular cusps
Chewing	Extensive chewing necessary	None; swallows food whole	Swallows food whole and/or simple crushing	Extensive chewing necessary
Saliva	Carbohydrate digesting enzymes	No digestive enzymes	No digestive enzymes	Carbohydrate digesting enzymes
Stomach Type Stomach Acidity	Simple or multiple chambers pH 4 to 5 with food in stomach	Simple Less than or equal to pH 1 with food in stomach	Simple Less than or equal to pH 1 with food in stomach	Simple pH 4 to 5 with food in stomach
Stomach Capacity	Less than 30% of total volume of digestive tract	60% to 70% of total volume of digestive tract	60% to 70% of total volume of digestive tract	21% to 27% of total volume of digestive tract
Length of Small Intestine	10 to more than 12 times body length	3 to 6 times body length	4 to 6 times body length	10 to 11 times body length
Colon	Long, complex; may be sacculated	Simple, short and smooth	Simple, short and smooth	Long, sacculated
Liver	Cannot detoxify vitamin A	Can detoxify vitamin A	Can detoxify vitamin A	Cannot detoxify vitamin A
Kidney	Moderately concentrated urine	Extremely concentrated urine	Extremely concentrated urine	Moderately concentrated urine
Nails	Flattened nails or blunt hooves	Sharp claws	Sharp claws	Flattened nails

Manu Singh

Adiljee questions are not the answers to previous questions and thus your new questions are not the answers to my previous concerns but well lets see one by one what you have come up with.

HUMAN NATURE AND THEIR PHYSIOLOGY

well again you just caress on logic than to delve in it. men by nature is a vegetarian in the words of Albert Einstein - If you put a baby in a cradle with a carrot and a rabit- and if the baby eats the rabbit and plays with the carrot I will become a non vegetarian instantly and forever.

Humans are conditioned to eat meat through the process of time. Lets see the Human Body for example in a comparitive way.

Facial Muscles- Our facial muscles are well developed unlike our carnivoral earthlings whose facial muscles are reduced to allow wide mouth gape.Jaw Type- we have an expanded angle unlike the predators.look at out jaw point location- like any herbivore its above the plane of the molars and not on the same plane. Even our motion is not shearing and is good side to side and front to back unlike a predator whose motion is shearing. The major jaw muscles we have are Masseter and pterygoids just as any herbivore while the carnivores have Temporalis as jaw muscles which aids in the tearing of flesh. Our mouth opening for our head size is large while for any carnivore its small. lets come to teeth now which you spoke about-bro please refer to science and you will know that every one has canines even the herbivores. the difference Ill tell you- Teeth are of three kinds Incisors, Canines and Molars. Our incisors are broad, flattened and spade shaped just like any herbivore while that of a carnivore are short and pointed.

Our molars are flattened with cusps vs nodular surface almost a like herbivore

A Slaughter House in the U.S.

where the surface is complex while in case of a carnivore they are sharp jagged and blade shaped. As for the canines which you talked about ours are short and blunted unlike a carnivore's sharp and long canines. Even our chewing is herbivoral and is elaborate antonymous of a meat eater which just swallows chunks. our saliva has Carbohydrate digesting enzymes like a herbivore unlike a carnivores saliva that has no digestive enzyme. Our stomach pH is between 4-5 just like that of any herbivore while that of a carnivore is less than 1. The length of our small intestine is 10-11 times our body length similarly our colon too is sacculated like that of a herbivore and is 3 times the size of a meat eater.I must tell you here that the meat eaters have smaller intestines and unsacculated ones so that they can quickly dispose of meat chunks and thats why intestinal cancer is unheard of in vegetarians coz it happens due to the decay of meat there. Our liver cannot detoxify vitamin A while than of a carnivore can, our kidneys too excrete moderately concentrated urine like a herbivore unlike a predator which is extremely concentrated which they use for territorial markings too. Above all we dont have claws. Lets examine these facts in a comparitive way through a chart-

The consumption of meat is hazardous to your health! According to the American Dietetic Association, meat-eaters have an increased risk of heart disease, colon cancer, obesity, adult-onset diabetes, gout, osteoporosis, kidney stones, gallstones, diverticular disease, lung cancer and breast cancer. Animal products, such as meat and eggs, are the only dietary sources of cholesterol and the chief source of saturated fat, the main causes of heart disease. Not eating these foods reduces the risk of heart attack by 90%. The fibre in vegetarian diets not only removes unneeded cholesterol and other cancer-causing agents, but helps in reversing atherosclerosis - hardening of the arteries. A 1990 study demonstrated reversal of even severe coronary disease through the combination of a low-fat vegetarian diet, stress management, moderate exercise and cessation of smoking. Vegetarians overall are 20% less likely to die from heart attack than meat-eaters.A low fat vegetarian diet, combined with regular exercise, helps reduce blood pressure and can control, or even eliminate, non-insulin dependent diabetes. Many medications to control high blood pressure have a wide range of common and unpleasant side effects, e.g. beta blockers often make patients fatigued and listless, diuretics raise blood cholesterol levels and double the risk of fatal heart attacks, blood vessel dilators can cause impotence in males, and a loss of sexual interest in females. When the American Journal of Clinical Nutrition put diabetics on a vegetarian diet, 45% of the patients were able to discontinue their use of insulin injections. In a 21-year study of over 27,000 Seventh Day Adventists (followers of a vegetarian diet), their death rate due to diabetes was found to be only 45% that of the general population. A vegan diet (no animal products whatsoever) can actually reverse mature-onset diabetes. When the diet recommended by the American Diabetes Association (ADA) and a vegan diet were compared over a 12 week period:The vegan group lost an average of 16 pounds, the ADA group 8 pounds; the ADA group needed as much medication as before, while the vegan group needed considerably less.Diets high in protein, especially animal protein, can cause the body to excrete more calcium, oxalate and uric acids which form kidney and gallbladder stones. Vegetarian diets have been shown to reduce the chance of forming these stones. An ultrasound study found that 18% of meat-eating women had symptomless gallstones, compared to only 10% in vegetarians. Because a vegetarian diet does not force calcium out of the body, as meat does, vegetarians are at a lower risk for osteoporosis - the weakening of the bones, a major health concern for women.

Vegetarianism can also benefit asthmatics and victims of multiple sclerosis (MS). According to a 1985 year-long study conducted by the University Hospital in Linkoping, Sweden, over 90% of bronchial asthma patients had less severe and less frequent attacks while eating a vegetarian diet, and reduced their need for medication. According to Dr. William Castelli, a switch to a vegetarian diet could help more than 90% of all MS victims arrest the disease process and improve their condition.Over two decades of research at the Loma Linda University in California reveals that men who eat meat are three times more likely to suffer from prostate cancer than vegetarians. According to a study done by Dr. Takeshi Hirayama of the National Cancer Research Institute of Tokyo, vegetarianism reduces the risk of breast cancer in women by 25%. Japanese women who followed a western style meat-based diet were eight times more likely to develop breast cancer than the women who followed a more traditional plant-based diet.One other cancer where diet has recently been shown to play a role is Non-Hodgkin Lymphoma (NHL). In a study of over 35,000 American women, those who developed NHL had higher intakes of animal fat, especially from red meat.Fiber intake is a critical factor in the prevention of cancer, especially of the colon. The Journal of the National Cancer Institute reported back in the 1970's that there is not a single population in the world with a high meat intake which does not have a high rate of colon cancer.Animal products are usually high in fat and always devoid of fiber. Vegetarians avoid animal fat, the consumption of which is linked to cancer, and get abundant fiber and vitamins that help prevent cancer. In a University of Hawaii study, vegetarians, on average, ate almost twice as much fiber as the meat eaters, especially cereal fiber. Vegetarians are therefore much less likely to suffer from constipation than meat-eaters. Blood analysis of vegetarians also reveals that they have higher levels of specialized white cells which attack and kill cancer cells. A UK study of over 6000 vegetarians found them 40% less likely to die of cancer than meat-eaters.

The Positive effects of vegetarianism on Longevity, health budget of a nation, sports and above all, the disastrous consequences of flesh consumption on a man's character as raised by Shri Adil ji would be answered in the next edition of Vaidik Sarvadeshik.

...To be continued

E-mail : tomanuji@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, किन्सेयॉक म्यू एवं इण्डिया लॉग फाउण्डेशन के सम्मिलित प्रयासों से

पैशाचिक बलात्कार तथा जघन्य हत्याकाण्ड के भुक्तभोगी

निठारी में 250 गरीब परिवारों को जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण

05 अगस्त, 2013 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं इण्डिया लॉग फाऊन्डेशन ने निठारी में 250 गरीब परिवारों को जीवनोपयोगी सामग्री के वितरण का आयोजन किया। निठारी दिल्ली से सटे नोयडा का वह स्थान है जहाँ मनिन्दर सिंह एवं नरेन्द्र कोली द्वारा अनेक बच्चों के साथ पैशाचिक बलात्कार एवं जघन्य हत्याकाण्ड का मामला सामने आया था। आज तक वहाँ के परिवार उस राक्षसी कुकृत्य की भयावह यादों को भुगत रहे हैं। निठारी की घटना के बाद उस क्षेत्र को अप्रत्याशित 'मीडिया कवरेज' प्राप्त हुई परन्तु इसके पश्चात भी वहाँ गरीबी का जो आलम है उसे देखकर कलेजा मुँह को आता है। अधिकतर परिवार असंगठित मज़दूरी कर रहे हैं और दाने–दाने को मोहताज हैं।

उसी इलाके में स्वामी अग्निवेश जी की पुरानी सहयोगी पद्मिनी कुमार, विमला पन्त जी एवं ज्योत्सना चटर्जी **'मेरा सहारा'** नाम का एक विद्यालय चला रही है जहाँ वहाँ के छोटे–छोटे बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जा रही है। 5 अगस्त, 2013 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं इण्डिया लॉग फॉऊन्डेशन ने इन्हीं परिवारों को जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण किया। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी, पद्मिनी कुमार, विमला पन्त, इण्डिया लॉग फॉऊन्डेशन के बिलाल अकिकगोज़, अग्नि फाऊन्डेशन के प्रधान आदित्य घिल्डियाल भी मौजूद थे।

जाति ऐसे नहीं टूटेगी

– डॉ. उदित राज

जाति व्यवस्था की गूढ़ता को इस देश के बुद्धिजीवी समझ नहीं सके हैं। यही कारण रहा है कि वे समाज को नहीं बदल पाए बल्कि समाज ने ही उन्हें प्रभावित किया। ऐसा जान–बूझ कर भले न हुआ हो, लेकिन इंसान जिस व्यवस्था का हिस्सा होता है, कभी–कभी उसकी बनावट, गूढ़ता और क्रूरता को नहीं समझ पाता और शायद यही हमारे बुद्धिजीवियों के साथ हुआ। जाति तब तक नहीं टूटेगी जब तक इसके अनगिनत फायदे लोग लेते रहेंगे। जन्म से लेकर मरण तक बिना किसी भुगतान या प्रयास के जाति का लाभ आदमी लेता रहता है।

शादी, सेक्स, संतान, लेन–देन, तिथि–त्योहार, पूजा–पाठ, सुख–दुख, राजनीतिक सत्ता आदि जरूरतों की पूर्ति जाति ही करती है। क्या इतना फायदा राजनीति से आम आदमी को मिल सकता है! मतदाता हो या समर्थक, राजनीति से उसे कभी–कभार कुछ फायदा जरूर मिल जाता है, लेकिन वह जाति नाम की संस्था से मिलने वाले लाभ के मुकाबले बहुत कम होता है। यही मुख्य कारण है कि लोग जाति नहीं छोड़ते। जब शादी जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति जाति के बाहर से होगी तभी जाकर यह टूटेगी।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने ग्यारह जुलाई को फैसला सुनाया कि जाति के आधार पर रैलियां नहीं होनी चाहिए। हाल में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने कुछ जातीय आयोजन जैसे ब्राह्मण सम्मेलन आदि किए। पूर्व में इस तरह की रैलियां होती रही हैं। जब से जाति के आधार पर खुल कर राजनीतिक समर्थन जुटाया जाने लगा है तब से इसकी आलोचना शुरू हुई है। सवर्ण बुद्धिजीवियों ने इसे जातिवाद के उभार के रूप में देखा और निंदा भी की। तमाम तरह के तर्क दिए गए कि इससे शासन–प्रशासन पर प्रतिकूल असर तो पड़ेगा ही, मेरिट (योग्यता) का अवमूल्यन भी होगा। अगर जाति की उत्पत्ति और उसकी अनवरत जारी व्यवस्था का प्रतिकार किया जाता तो बात समझ में आती है कि जाति के आधार पर राजनीतिक रैलियां नहीं होनी चाहिए।

इस फैसले के पक्ष में कुछ लोग मुखर होकर बोले तो कुछ ने दबी जुबान से इसकी आलोचना की कि जब राजनीति में उनकी भागीदारी का समय आया तो हाइकोर्ट ने क्यों अड़ंगा लगाना शुरू किया?जाति आधारित सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक संगठन भी हैं और ये लगभग सभी जातियों में हैं, तो अदालत ने इन पर क्यों नहीं रोक लगाई?

सबसे पहले इस फैसले के पैरोकारों के बारे में चर्चा कर ली जाए कि वे स्वागत क्यों कर रहे हैं, जबकि वे जाति व्यवस्था बनाए रखने के पक्ष में हैं। बीस जुलाई को एनडीटीवी पर बहस के लिए अखिल भारतीय जाट महासभा से युद्धवीर सिंह, विश्व ब्राह्मण महासभा से मांगेराम शर्मा, क्षत्रिय महासभा से महेंद्र सिंह तंवर और पोतदार समाज के प्रतिनिधि भी आमंत्रित किए गए। सभी ने एक स्वर से जाति आधारित रैलियों पर प्रतिबंध लगाने के फैसले का स्वागत किया। उनसे पूछा गया कि फिर क्यों वे जाति के आधार पर सामाजिक संगठन चला रहे हैं?क्या वे जाति छोड़ने के लिए तैयार हैं?सभी ने तुरंत कहा कि वे ऐसा क्यों करें?इसमें जो अंतर्विरोध उभरा, वह दिलचस्प था।

यह दोहरे चरित्र की पराकाष्ठा नहीं तो क्या है कि जहां जाति से लाभ हो वहां तो उसका स्वागत है और हानि की जगह पर विरोध। ऐसे में क्या जाति की भावना के जहर को खत्म किया जा सकता है?क्षत्रिय महासभा के प्रतिनिधि तो पूरी तरह अपनी पहचान जताने वाले लिबास में आए थे और जाति का विरोध भी कर रहे थे। हिंदू समाज एक नहीं, तमाम अंतर्विरोधों का पुलिंदा है। और जिस–जिसको इस व्यवस्था से हानि होती है, विरोध तो करता है लेकिन उसे समाप्त करने के लिए तैयार नहीं होता।

जैसे–जैसे सामाजिक और राजनीतिक हालात में बदलाव आए हैं, तथाकथित निम्न जातियां शासन–प्रशासन में भागीदारी के लिए हाथ–पांव मारने लगी हैं। संचार के क्षेत्र में क्रांति आने से शोषित जातियों की मुहिम और तेज हुई है। इस फैसले से इनको लगता है कि सवर्ण मानसिकता की न्यायपालिका ने पक्षपात किया, अगर ऐसा नहीं है तो जाति आधारित सामाजिक और धार्मिक रैलियों पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगाया?चूंकि मीडिया का खुले रूप से हाइकोर्ट के फैसले को समर्थन है, इसलिए दलितों और पिछड़ों के नेता खुल कर नहीं बोल रहे हैं लेकिन वे असहज जरूर हुए हैं।

कुछ पिछड़ी जातियों के नेताओं ने फैसले का स्वागत किया है लेकिन वह दिखाने के लिए है। जब उनका खुद का आधार जाति है तो बेहतर है कि ईमानदारी से सच्चाई को स्वीकार करें, न कि ढिठाई से वही काम करें और स्वीकार भी न करें। प्रतिबंध लगने से प्रतिक्रिया की संभावनाएं ज्यादा हैं।

बहुत संभव है कि अब गली–गली और मोहल्ले–मोहल्ले में यह सुनाई दे कि जब सत्ता में हमारी भागीदारी की बात आई तो जातिवाद नजर आने लगा! क्या यह फैसला वोट डालते समय लोगों की जाति–भावना रोक सकेगा?चुनावी प्रचार रात–दिन गली–गली और गांव–गांव में होता है तो वहां कौन पहरेदारी करेगा कि कार्यकर्ता और उम्मीदवार जाति–भावना का इस्तेमाल न करें।

इस फैसले से जातिवाद बढ़ भी सकता है, कम होने की संभावना नहीं है। कारण यह है कि अब लगभग सभी जातियों का रुझान सत्ता में भागीदारी लेने का बन गया है। जिन दलों ने इस फैसले का स्वागत किया है क्या वे उम्मीदवार चुनते समय जाति–समीकरण नहीं देखते हैं?लगभग सभी दलों के पास गांव स्तर तक जातियों के आंकड़े हैं और चुनावी रणनीति या प्रचार में इनका ध्यान रखा जाता है। बहुत संभव है कि जाति की रैली या सम्मेलन हो और उसका उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक या भाईचारा बताया जाए! फिर, अदालत का यह फैसला क्या कर सकेगा?

राजनीतिक लाभ के लिए जाति को कितना भी इस्तेमाल किया जाए, इसकी एक सीमा है। इंसान सामाजिक हुए बिना नहीं रह सकता, जबकि वह अराजनीतिक हो सकता है। इससे बात साफ हो जाती है कि समाज का पलड़ा बहुत भारी है। समाज में अगर जाति का वर्चस्व बना रहे तो राजनीति के क्षेत्र में चाहे जितना इसे कमतर करने की कोशिश की जाए, इसका असर शासन–प्रशासन और देश पर खास नहीं होगा। हजारों वर्ष तक देश गुलाम रहा तो उसका कारण था सामाजिक स्तर पर अलगाव और एक दूसरे से नफरत। जिस दिन समाज में जातिवाद समाप्त हो जाएगा, उसका अस्तित्व राजनीति में रहेगा ही नहीं।

जाति व्यवस्था की गूढ़ता को इस देश के बुद्धिजीवी समझ नहीं सके हैं। यही कारण रहा है कि वे समाज को नहीं बदल पाए बल्कि समाज ने ही उन्हें प्रभावित किया। ऐसा जान–बूझ कर भले न हुआ हो, लेकिन इंसान जिस व्यवस्था का हिस्सा होता है, कभी–कभी उसकी बनावट, गूढ़ता और क्रूरता को नहीं समझ पाता और शायद यही हमारे बुद्धिजीवियों के साथ हुआ। जाति तब तक नहीं टूटेगी जब तक इसके अनगिनत फायदे लोग लेते रहेंगे। जन्म से लेकर मरण तक बिना किसी भुगतान या प्रयास के जाति का लाभ आदमी लेता रहता है।

शादी, सेक्स, संतान, लेन–देन, तिथि–त्योहार, पूजा–पाठ, सुख–दुख, राजनीतिक सत्ता आदि जरूरतों की पूर्ति जाति ही करती है। क्या इतना फायदा राजनीति से आम आदमी को मिल सकता है! मतदाता हो या समर्थक, राजनीति से उसे कभी–कभार कुछ फायदा जरूर मिल जाता है, लेकिन वह जाति नाम की संस्था से मिलने वाले लाभ के मुकाबले बहुत कम होता है। यही मुख्य कारण है कि लोग जाति नहीं छोड़ते। जब शादी जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति जाति के बाहर से होगी तभी जाकर यह टूटेगी।

आज से लगभग ढाई हजार साल पहले जाति तोड़ने का महा अभियान गौतम बुद्ध ने चलाया था। वह असरदार भी रहा। लेकिन धीरे–धीरे फिर से जाति व्यवस्था हावी हो गई। उन्नीसवीं शताब्दी में ज्योतिबा फुले जैसे महान समाज सुधारक ने इसकी समाप्ति के लिए अभियान चलाया और उसे आगे बढ़ाने का कार्य डॉ बीआर आंबेडकर, पेरियार, नारायण गुरु आदि ने किया।

जितनी जाति टूटी नहीं उससे कहीं ज्यादा इसके प्रति चेतना का प्रादुर्भाव जरूर हो गया। तभी तो इलाहाबाद हाइकोर्ट ने ऐसा फैसला दिया। कभी जाति–व्यवस्था सवर्णों के पक्ष में थी, लेकिन अब धीरे–धीरे इसका कुछ लाभ दलितों और पिछड़ों को मिलने लगा है।

यही कारण है कि पिछड़ों और दलितों के नेताओं की जुबान पर भले इन महापुरुषों का नाम होता है, राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए वे जाति की खूब गोलबंदी करते हैं। यह बड़ा आसान तरीका है। इस तरीके से यानी जाति की भावना के सहारे कई बार चुनाव लड़ा जा सकता है। विकास, कानून व्यवस्था और शासन–प्रशासन अच्छा रहे या न रहे, जाति का समर्थन भावनावश मिलता रहता है।

सवर्ण भी राजनीतिक लाभ के लिए जाति की रैली करते, अगर वह फायदेमंद होती। क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य नेता अगर राजनीतिक लाभ के लिए जाति–रैली करेंगे तो यह उलटा पड़ जाएगा क्योंकि इनकी संख्या काफी कम है और ये लोग वोट देने कम ही जाते हैं। यही कारण है कि जाट महासभा, ब्राह्मण महासभा, राजपूत महासभा के नेताओं ने जाति तोड़ने का जबर्दस्त विरोध किया और इसका इस्तेमाल समाज और धर्म में करने से बिल्कुल गुरेज नहीं किया, सिवाय राजनीति के। जाति व्यवस्था ऐसी है कि सवर्णों को सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्र में इसकी गोलबंदी का फायदा तो होता है, लेकिन अगर यही काम वे राजनीति में करेंगे तो घाटा होने के अवसर ज्यादा हैं।

ब्राह्मण महासभा के नेता मांगेराम ने कहा कि इनकी जाति के साथ अन्याय हो रहा है और लोग मजबूर होकर नौकरी करने अमेरिका जा रहे हैं। इनसे कहा गया कि अब भी तमाम सरकारी विभागों में सत्तर प्रतिशत तक ब्राह्मण हैं तो उनके पास इसका कोई जवाब नहीं था लेकिन शिकायत बनी रही कि ब्राह्मणों के साथ भेदभाव हो रहा है! जाट और राजपूत नेताओं ने भी यही बात दोहराई! जब उन्हें अपनी जाति में ही रहने से घाटा हो रहा है तो हमने कहा कि ऐसे में जाति तोड़ने में ही भलाई है। मगर वे लोग इस पर सहमत नहीं हुए।

यह कैसी मानसिकता है कि जब जाति से फायदा हो तो उसका स्वागत और घाटे की जगह पर विरोध। इस समय लगभग सभी जातियां असंतुष्ट लग रही हैं कि उन्हें जितना मिलना चाहिए नहीं मिल पा रहा है, वे अपने प्राप्य से वंचित हो रही हैं। तो ऐसी स्थिति में कांशीराम के नारे पर क्यों नहीं देश के लोग चलने पर सहमत हो जाते हैं कि जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी भागीदारी। जाति तो मरने पर भी नहीं जाती है।

हाल में इंग्लैंड की संसद ने एक कानून बनाया कि उनके यहां भारत से गए विभिन्न जातियों के लोगों में जो भेदभाव है, अगर वहां वैसा बर्ताव किया जाता है तो जुर्म माना जाएगा। इसका सवर्ण जातियों ने विरोध किया लेकिन कानून बन ही गया। अगर इस देश में दो सामाजिक बाधाएं नहीं होतीं, एक जाति और दूसरा लिंग आधारित भेदभाव, तो इसको दुनिया की महाशक्ति बनने से कोई रोक नहीं पाता। जाति का विरोध हो तो पूरी ईमानदारी से हो।

– जनसत्ता से साभार

E-mail : dr.uditraj@gmail.com

स्वामी अग्निवेश जी द्वारा आर. टी. आई. और सी. बी. आई. पर प्रेस वक्तव्य

कोमा में जा रहा भारतीय लोकतंत्र

नई दिल्ली, 03 अगस्त, 2013 : एक तरफ सर्वोच्च न्यायालय बार–बार सीबीआई को केन्द्र सरकार का तोता बता रहा है और उसे सशक्त करने के सुझाव देते देते थक गया–जिसे आज केन्द्र सरकार ने पूरी तरह नकार दिया। दूसरी तरफ सी. पी. आई. को छोड़कर सारी की सारी प्रजातांत्रिक पार्टियाँ आर. टी. आई. कानून का गला घोंटने के लिए लामबंद होती जा रही हैं। ऐसा लगता है कि, मानो देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था 'वेंटिलेटर' पर पड़ी अपनी अंतिम सासें गिन रही हैं।

भारतीय राजनीति तीव्रता से पतन की ओर अग्रसर हो रही है। हमारे जैसे कई साथी इस लड़ाई में लगे हैं कि प्रजातंत्र को केवल पांच साल में एक बार मनाये जाने वाले चुनावी उत्सव के रूप में न देखा जाये, अपितु उसके असली स्वरूप यानी 'भागीदारी का प्रजातंत्र' (Participatory Democracy) के रूप में देश में स्थापित किया जाये। पर आज हम लोगों को भारी निराशा होती है जब हम देखते हैं कि इतने व्यापक संघर्ष के पश्चात् जो आर. टी. आई. नामक जीत जनता को प्राप्त हुई थी उसे अर्थहीन बनाने के लिए किस प्रकार सी. पी. आई. को छोड़कर सारी पार्टियां गोलबंद हो–'चोर चोर मौसेरे भाई' की कहावत को चरितार्थ कर रही हैं। फिर चाहे वह आर. टी. आई. लाने के लिए अपनी पीठ ठोंकने वाली यू. पी. ए. हो या भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने का दम्भ करने वाली एन. डी. ए. या फिर किसान मज़दूरों के हितों की ठेकेदारी करने वाली सी. पी. एम.!

जहाँ सवाल जवाबदेही एवं पारदर्शिता का आता है इन सब पार्टियों के खोखले दावों की हवा निकल जाती है। भारतीय प्रजातंत्र की आंतरिक सुरक्षा को सबसे बड़ा खतरा नक्सलियों से नहीं अपितु भेड़ के रूप में इन भेड़ियों से है, जो असल मायनों में हमारे देश की अस्मिता के साथ बलात्कार कर रहे हैं। मैं इन सब पार्टियों की कड़े शब्दों में आर. टी. आई. को खोखला बनाने पर भरसक निंदा करता हूँ और साथ ही साथ सी. पी. आई. को उनके क्रान्तिकारी कदम के लिए साधुवाद देता हूँ।

– स्वामी अग्निवेश

शोध संगोष्ठी

विषय : वेदों में इतिहास

तिथि : श्रावण शुक्ला एकादशी, वि. सं.–2070, शनिवार, दिनांक 17–08–2013

आपको यह सूचित करते हुए महती प्रसन्नता हो रही है कि स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल आश्रम, टीकरी, भोला, मेरठ (उत्तर प्रदेश) में आगामी श्रावण शुक्ल एकादशी, वि. वं. 2010, शनिवार तदनुसार दिनांक 17 अगस्त, 2013 को प्रातः 10 बजे वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 'वेदों में इतिहास' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करने एवं चर्चा में भाग लेने हेतु आप सादर आमन्त्रित हैं। विद्वज्जनों से निवेदन है कि अग्रलिखित विषयों पर अपना शोधलेख वॉकमेन चाणक्य–901 फॉन्ट में टंकित कर pavamani1986@gamil.com पर इ–मेल करें तथा टंकित एक प्रति अपने साथ लाने का कष्ट करें। आप द्वारा शोधगोष्ठी में प्रस्तुत सभी स्तरीय लेख त्रैमासिकी शोधपत्रिका ISSN-2229-6328 'पावमानी' में प्रकाशित किये जाते हैं।

शोधगोष्ठी में अग्रलिखित बिन्दुओं पर आप अपना शोधलेख प्रस्तुत कर सकते हैं :–

(1) वेदों में इतिहास का स्वरूप (मीमांसा पक्ष/निरुक्त पक्ष), (2) वेदों में इतिहास परिकल्पना के कारण।, (3) वेदों में मानवीय इतिहास का अस्तित्व। (4) भारतव्यपदेशेन आम्नायार्थश्च दर्शितः। (5) सर्वेषामेव नामानि कर्माणि च पृथक–पृथक। वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे।। (6) वैदिक ज्ञान–विज्ञान का पौराणिक आख्यानों में उपबृंहण। (7) वैदिक वाङ्मय के विविध आख्यानों के आधिभौतिक, एवं आध्यात्मिक स्वरूप। (किसी एक आख्यान को केन्द्रित कर)

इसके अतिरिक्त विद्वज्जन स्व–ऊहित शीर्षक से भी शोधपत्र प्रस्तुत कर सकते हैं।

आशा है विद्वज्जन वैदिक ज्ञान–विज्ञान एवं संस्कृति–सभ्यता के प्रसार हेतु आयोजित इस गोष्ठी को सफल करने में सहयोग प्रदान करेंगे।

– स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

अध्यक्ष, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ–250501 (उत्तर प्रदेश)

आइये हम भी इस अन्याय का विरोध करें
सोनी सोरी और लिंगा कोड़ोपी पर चर्चा

– हिमांशु कुमार

– हिमांशु कुमार

लिंगा कोड़ोपी एक आदिवासी पत्रकार है। वह अभी छत्तीसगढ़ की जेल में कैद है। लिंगा कोड़ोपी को पुलिस अधिकारियों ने पहले पुलिस का मुखबिर बनने के लिए थाने के शौचालय में चालीस दिन तक कैद कर के रखा। लेकिन लिंगा कोड़ोपी की बुआ सोनी सोरी ने अदालत की मदद से लिंगा कोड़ोपी को पुलिस के चंगुल से आज़ाद करवा लिया। इसके बाद पुलिस अधिकारी और सरकार इन दोनों आदिवासियों से बुरी तरह चिढ गई। पुलिस ने बदला लेने के लिए लिंगा कोड़ोपी के भाई का अपहरण कर लिया। लिंगा कोड़ोपी ने अदालत में शिकायत कर के अपने भाई को आज़ाद करवा लिया। इससे पुलिस लिंगा कोड़ोपी से और भी ज्यादा चिढ़ गयी।

पुलिस ने लिंगा कोड़ोपी की हत्या करने के लिए एक रात लिंगा कोड़ोपी के गाँव पर हमला किया। लेकिन लिंगा कोड़ोपी गाँव के बाहर एक खंडहर में सोया हुआ था क्योंकि लिंगा कोड़ोपी को मालूम था की पुलिस ऐसा कर सकती है। लिंगा कोड़ोपी नहीं मिला तो पुलिस चिढ़ कर लिंगा कोड़ोपी के बूढ़े पिता को पकड़ कर ले गयी। जान बचाने के लिए लिंगा कोड़ोपी दिल्ली आ गया और यहाँ उसने पत्रकारिता की पढ़ाई करी। तभी पुलिस ने छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के तीन गाँव में आदिवासियों के घरों में आग लगा दी, पुलिस ने इन तीन गाँव की पाँच महिलाओं से बलात्कार किया और तीन आदिवासियों की हत्या कर दी। लिंगा कोड़ोपी अपना वीडियो कैमरा लेकर वहाँ गया और उसने जले हुए मकानों के निवासियों और बलात्कार पीड़ित महिलाओं का बयान रिकार्ड कर लिया और उसकी सीडी बना ली। लिंगा कोड़ोपी द्वारा पुलिस अत्याचारों की सीडी बनाने से पुलिस और सरकार बुरी तरह डर गई। लिंगा कोड़ोपी का मुँह बंद रखने और उसकी मदद करने वाली उसकी बुआ सोनी सोरी को पुलिस ने पकड़ कर जेल में कैद कर दिया। पुलिस ने इन आदिवासियों को सबक सिखाने के इरादे से लिंगा कोड़ोपी की बुआ जो कि पेशे से शिक्षिका है को थाने में ले जाकर उनके गुप्तांगों में पत्थर के टुकड़े भर दिए और उन्हें बिजली के झटके दिए।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर डाक्टरों ने जाँच के बाद सोनी सोरी के शरीर से पत्थर के टुकड़े निकाल कर अपनी रिपोर्ट के साथ सर्वोच्च न्यायालय को भेज दिए। तब से लेकर आज डेढ़ साल बीतने के बाद भी सोनी सोरी और लिंगा कोड़ोपी दोनों अभी भी छत्तीसगढ़ की जेल में कैद हैं। पुलिस ने लिंगा कोड़ोपी को दो फर्जी मामलों में फंसाया था। इनमे से एक मामले में अदालत ने लिंगा कोड़ोपी को निर्दोष घोषित कर दिया है। लेकिन लिंगा कोड़ोपी के खिलाफ दूसरा एक और फर्जी मुकदमा अभी भी जारी है। लिंगा कोड़ोपी की बुआ सोनी सोरी को पुलिस ने आठ फर्जी मामलों में फंसाया था, लेकिन अदालत ने उसमे से पाँच मामलों में सोनी सोरी को बरी कर दिया है एक मुकदमा खारिज हो चुका है और एक मामले में सोनी सोरी को अदालत ने जमानत दे दी है। अब सोनी सोरी और लिंगा कोड़ोपी मात्र एक ही मामले में छत्तीसगढ़ के जगदलपुर की जेल में कैद हैं। यह मामला आदिवासियों पर होने वाले बड़े पैमाने पर सरकारी अत्याचारों में से मात्र एक मामला है। ऐसे अत्याचारों के हजारों मामले अभी भी दबे पड़े हैं।

ये आदिवासी भी हमारे देशवासी हैं। लेकिन इन पर इसलिए जुल्म किया जा रहा है क्योंकि सरकार इन आदिवासियों को इनके गाँव से भगाना चाहती है। सरकार में बैठे नेता और पुलिस अधिकारी बड़ी कम्पनियों से रिश्वत खाकर इन आदिवासियों की जमीने छीनना चाहते हैं। इसलिए सरकार चाहती है की आदिवासी अपने गाँव खाली कर दें। इसलिए आदिवासियों पर इस तरह के सरकारी अत्याचार लगातार किये जा रहे हैं। हम अगर अपने देशवासियों का ख्याल रखते हैं तो हमें इस तरह के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। आइये हम भी इस अन्याय का विरोध करें।

– 273 सैक्टर–19, पाकेट–2, अमराही गाँव के पास, द्वारका, दिल्ली–110075
मो.:–9013893955
e-mail : vcadantewada@gmail.com

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का चुनाव
आर्य समाज फरीदाबाद, सैक्टर–19, हरियाणा में सम्पन्न

गत् 14 जुलाई रविवार को आर्य भजनोपदेशक परिषद् की कार्यकारिणी एवं पदाधिकारियों के चुनाव यज्ञ सत्संग के पश्चात् निर्वाचन अधिकारी आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) ने निम्नलिखित प्रकार से करायें।

प्रधान – श्री सत्यपाल 'मधुर' (दिल्ली)
उपप्रधान – श्री सहदेव बेधड़क (हरियाणा), श्री योगेश आर्य (बिजनौर)
महामन्त्री – डॉ. कैलाश 'कर्मठ' (कोलकाता)
उपमंत्री – श्री उपेन्द्र आर्य (चण्डीगढ़), श्रीमती सुरेश आर्या (दिल्ली)
कोषाध्यक्ष – श्री नरेशदत्त आर्य (बिजनौर)
लेखा परीक्षक – श्री त्रियुगी नारायण पाठक
संरक्षक – स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली), डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)

कार्यकारिणी सदस्य

श्री बेगराज आर्य, श्री बृजपाल कर्मठ, श्री हरिसिंह आर्य (गादोज), श्री नरेश निर्मल, श्री सत्यपाल सरल, श्रीमती सुलभा शास्त्री, श्री कुलदीप आर्य, श्री ज्ञानेन्द्र तेवतिया, श्री नारायण सिंह आर्य।

विशेष आमंत्रित अंतरंग सदस्य : श्री उदयवीर आर्य, श्री सत्यप्रकाश आर्य।

– डॉ. कैलाश 'कर्मठ', मन्त्री

महर्षि की साधना से ही देश हुआ स्वतंत्र

आर्य समाज रामपुरा, कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय में आर्य समाज स्थापना दिवस पर वैदिक समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान शिवनारायण, उपाध्यक्ष हाड़ौती किसान मंच के महामंत्री दशरथ कुमार एवं आर्य परिवार संस्था के मंत्री इन्द्र कुमार सक्सेना भी उपस्थित थे। समारोह का शुभारम्भ देवयज्ञ से हुआ। तत्पश्चात् आर्य समाज के मंत्री एवं विद्यालय के व्यवस्थापक डी. पी. मिश्रा ने बालक–बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में बम्बई में की गई थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना वेदों का प्रचार–प्रसार करने के लिए की थी। उन्होंने विश्व में फैले आडम्बरों को दूर करने एवं सभी को वेदमार्ग पर चलने का आग्रह किया। रूढ़िवाद, महन्तों, मठाधीशों में उलझे समाज को नई दिशा दी। 1867 में हरिद्वार के कुम्भ मेले में अपनी प्रख्यात पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर आर्य जाति के उत्थान का मंत्र सुनाया मूर्तिपूजा व बहुदेववाद, जातिप्रथा, बालविवाह इत्यादि कुरीतियों का कड़ा विरोध करते हुए शिक्षा का प्रचार–प्रसार नारी उद्धार जैसी बातों का प्रबल समर्थन दिया। अपने गुरु के एक आदेश पर उन्होंने प्रभु भक्ति व समाधि को त्याग कर अपना सम्पूर्ण जीवन इस राष्ट्र को जगाने में ही होम कर दिया।

16 वैदिक संस्कारों से एक प्रचण्ड शक्तिशाली बेहतर वैदिक भव्य भारत का निर्माण की आधारशिला महर्षि ने रखी थी, जिसकी बलिवेदी पर उन्होंने अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी। महर्षि की घोर तपस्या व साधना से ही भारत स्वतंत्र हुआ। महर्षि ने जीवन के प्रत्येक आवश्यक क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दिया, जिसे हम भारतवासी कदापि नहीं भुला सकते। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि इस वीतरागी राष्ट्रीय संत के सुझाए गये पथ पर चलें, उनके अधूरे सपनों को पूरा करने में महती भूमिका निभाएं। तभी स्थापना दिवस मनाने का कोई औचित्य होगा। शिवनारायण उपाध्याय ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य एवं महर्षि के द्वारा दिये गये कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन मृदुला सक्सेना ने किया। शांतिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– डी. पी. मिश्रा, कोटा

आर्य समाज लाजपत नगर, नई दिल्ली में उत्तराखण्ड आपदा में मृत मानवों की आत्माओं की शांति हेतु 6 जुलाई को विशेष यज्ञ और श्रद्धांजली सभा सम्पन्न

मानवीय उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए आर्य समाज, लाजपत नगर, नई दिल्ली ने आर्य समाज की यज्ञवेदी पर उत्तराखण्ड की भीषण प्राकृतिक आपदा में मृत व लापता मानवों की आत्माओं की सुख–शान्ति हेतु विशेष यज्ञ का आयोजन, आचार्य मेघश्याम जी के ब्रह्मत्व में किया गया जिसमें भारी संख्या में आर्यजनों ने भाग लिया। तदोपरान्त श्रद्धांजली सभा का आयोजन हुआ जिसमें सर्वप्रथम आचार्य मेघश्याम जी ने शोक प्रस्ताव रखा और दिवंगत आत्माओं की शान्ति हेतु 2 मिनट का मौन धारण किया गया।

इसके बाद आचार्य जी ने त्रासदी में जीवित बचे अनाथ बच्चों, युवकों और वृद्धों के जीवन यापन के साधन जुटाने में उत्तराखण्ड सरकार को यथा सम्भव आर्थिक और वस्त्र आदि की सहायता भेजने हेतु प्रस्ताव रखा जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया।

तदोपरान्त आर्य समाज, लाजपत नगर के विशेष आमंत्रण पर पधारे स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती ने अपने एक घण्टे के सारगर्भित प्रवचन का शुभारम्भ ओ३म् ध्वनि और गायत्री मन्त्र के सामूहिक उच्चारण के बाद –

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

का उच्चारण कर प्रवचन आरम्भ करते हुए कहा कि मानव जाति को परमात्मा ने बुद्धि इसलिए प्रदान की है कि वह उसके सदोपयोग से अपनी उन्नति के मार्ग खोजें, परन्तु मानव अज्ञानवश या भ्रमवश परमात्मा को ही विसार कर पाषाणखण्ड को ही परमात्मा मानकर उसकी आराधना करने लगता है और इस प्रकार वह वेद ज्ञान के मार्ग से भटक जाता है, कष्ट और दुःख भोगता है। उत्तराखण्ड की आपदा के पीछे मूल कारण भी मानव जाति का परमात्मा के वेदज्ञान के मार्ग से भटक जाना ही कहा जा सकता है क्योंकि ऐसी विनाशकारी घटनाओं के घटित होने की अन्य सम्भावनायें नहीं जान पड़ती। परमात्मा ने स्पष्ट चेतावनी दी है :–

ओ३म् मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञान्द्रि सोमिनः।
मान्त स्थुनो अरातयः।। अथर्व. 13–1–59।।

अर्थात् (इन्द्र पथः वयम् मा प्रगाम) परमेश्वर के वेदमार्ग से हम दूर न जावें और (मा सोमिनः यज्ञान्) ना ही ऐश्वर्य युक्त यज्ञ, अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण और दान के व्यवहार से, दूर जावें तथा (अरातयः न अन्तः मा स्थु) अदानी, दान न करने वाले लोग हमारे बीच न ठहरें अर्थात् सभी को अपनी धर्म की आय का एक भाग दान करना अनिवार्य है।

परन्तु खेद है कि दानप्रायः जनता ऐसी जगहों पर देती हैं जहाँ उसका दुरुपयोग ही होता है। यज्ञ कार्य में बहुत थोड़े जन ही दान देते हैं और वह सदा सुख में रहते हैं।

केदारनाथ, बद्रीनाथ, रुद्रप्रयाग, गंगोत्री, अमरनाथ आदि तथा कथित तीर्थ स्थलों पर जाने और मानने से पाप कर्म क्षमा नहीं होते बल्कि उनमें वृद्धि होती है और प्राकृतिक आपदाओं का सृजन होता है।

वेद मार्ग पर न चलने के कारण ही वर्तमान में नारी उत्पीड़न में वृद्धि हो रही है। वेद में ईश्वर ने नारी के लिए उपदेश दिया है –

ओ३म् अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्री ब्रह्मा बभूविथ।। ऋ. 8–3–19।।

अर्थात् नारी को वस्त्र इस प्रकार के पहनने चाहिए निसे उसके शरीर अंग दिखाई न दें और उसे नीचे देखते हुए सम्हल कर, सावधान होकर चलना चाहिए। क्योंकि नारी को मानव निर्माता कहा गया है।

परन्तु वर्तमान में नारी का पहनावा शरीर के अंगों को पूर्ण रूप से परिलक्षित करता है जो पुरुष में काम वासना को उत्तेजित करता है परिणाम स्वरूप कामुक और विषयी लोग बलात्कार, अपहरण, हत्या या दुराचार कर बैठते हैं। इन्द्रियगणों के वश में ऐसे लोग स्वयं पर नियन्त्रण खो बैठते हैं। अतः माता–पिता सावधान होकर बच्चों में वैदिक सदाचार की भावना जागृति करें और स्त्री जाति की रक्षा के प्रति अपने दायित्वों को निभायें।

आचारहीन विदेशी सभ्यता में फँसे व्यक्ति अब अपने वृद्ध माता–पिता को वृद्धाश्रमों में भरती करने लगे हैं। जैसे बूढ़ी गाय को गोशाला में ईश्वर सहारे छोड़ आते हैं।

स्वामी जी ने जोर देकर कहा कि वर्तमान में सदाचार का तकाजा है कि हम सभी उत्तराखण्ड की आपदा में बचे अनाथों के लिए यथा सम्भव सहायता प्रदान करें जो महान यज्ञ है।

शान्ति पाठ के बाद सभा समाप्त हुई और आर्य समाज की ओर से सभी उपस्थित भद्रजनों को स्वादिष्ट जलपान कराकर विदा किया गया। आर्य समाज, लाजपत नगर के पदाधिकारी इस शुभ आयोजन के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

– आचार्य मेघश्याम, पुरोहित, आर्य समाज, लाजपत नगर, नई दिल्ली

वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्य समाज बीकानेर–गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी हरियाणा का 71वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 21 व 22 सितम्बर, 2013 (शनिवार व रविवार) को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी, आर्य प्रवक्तागण व भजनोपदेशक आमन्त्रित हैं।

अतः सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में परिवार सहित पधार कर वेदामृत पान कर जीवन को सफल बनायें।

– धर्मवीर आर्य, मन्त्री

NDPSo on 9/10 अगस्त, 2013
प्रकाशन की तिथि : 08 अगस्त, 2013
वैदिक सार्वदेशिक 08 से 14 अगस्त, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

पंच-सरपंच पंजाब को नशामुक्त बनाएं - बादल

मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने प्रदेश को नशामुक्त करने के लिए पंचायतों से सकारात्मक भूमिका अदा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पंच–सरपंच गांवों के विकास पर फोकस करें। इसमें धन की कमी आड़े नहीं आने दी जाएगी। इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से पंजाब को नशामुक्त करने के लिए पाकिस्तान से सटी राजस्थान सीमा सील करने की मांग की है। बादल का कहना है कि राजस्थान सीमा से ही पंजाब में स्मैक, हेरोइन व भुक्की जैसे नशे आसानी से आ रहे हैं।

ज्ञातव्य हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी पूरे देश में माँसाहार और शराब के सेवन के विरूद्ध अलख जगा रहे हैं। उनका कहना है कि अधिकांश अपराध और हादसे शराब पीने के कारण होते हैं। उन्होंने सरकार से माँग की है कि पूरे देश में शराबबन्दी लागू की जानी चाहिए।

जूनियर महिला हाकी टीम स्वदेश लौटी

नई दिल्ली, 6 अगस्त (भाषा)। जूनियर विश्व कप में कांस्य पदक विजेता भारतीय जूनियर महिला हाकी टीम मंगलवार को स्वदेश लौटी तो उसका गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

टीम सुबह दुबई के रास्ते इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंची। भारत ने रविवार को कांस्य पदक के मुकाबले में इंग्लैंड को पेनल्टी शूटआउट में हराया। इससे पहले भारत कभी क्वार्टर फाइनल से आगे नहीं गया था। कप्तान सुशीला चानू ने कहा कि पूरी टीम देश का नाम रोशन करके खुश है। उन्होंने कहा कि हम बहुत खुश हैं। कांस्य पदक मैच में हम पर दबाव था लेकिन हमें जीत का यकीन था।

प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट रही रानी रामपाल ने कहा, 'कि इस जीत से साबित हो गया कि भारत में हाकी अभी मरी नहीं है। उन्होंने कहा कि यह मेरे करिअर की सबसे बड़ी जीत है। हमने कभी ओलंपिक के लिए क्वालीफाई नहीं किया लिहाजा यह जीत भारतीय महिला हाकी के लिए बहुत बड़ी है। रानी ने कहा कि यह ऐतिहासिक जीत है और हमें अब शीर्ष टीमों को हराने का आत्मविश्वास है। इससे हाकी प्रेमियों में यह विश्वास पैदा हुआ है कि भारत में हाकी अभी मरी नहीं है।

जूनियर विश्व कप में कांस्य पदक जीतने वाली जनियर महिला हाकी टीम

बेजोड़ प्रतिभा की धनी है रानी : बलदेव सिंह गौरवान्वित हैं क्योंकि उनके मार्गदर्शन में हाकी के गुर सीखने वाली लड़कियों ने भारत को जर्मनी के मोंशेंग्लाबाख में जूनियर महिला हाकी विश्व कप में कांस्य पदक दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

बलदेव के पसंदीदा शिष्यों में से एक रानी रामपाल टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बनी और कोच ने कहा कि यह 19 साल की खिलाड़ी बेजोड़ प्रतिभा की धनी हैं जो लंबे समय तक देश की सेवा कर सकती है।

कोच ने कहा, 'उनमें (रानी में) किलर इंस्टिंक्ट है। वे अन्य लड़कियों से अलग हैं और खेल को काफी जल्दी समझ जाती हैं। निश्चित तौर पर वे बेजोड़ प्रतिभा की धनी हैं।' भारतीय टीम में शामिल हरियाणा की छह हाकी खिलाड़ियों में से पांच शाहबाद की हैं जिनमें नवजोत, मनजीत कौर, नवनीत कौर, रानी, मोनिका और पूनम रानी शामिल हैं। राज्य से हिसार की एक खिलाड़ी भी राष्ट्रीय टीम का हिस्सा है। शाहबाद की लड़कियों ने इलाके के अलावा देश को भी काफी गौरवान्वित किया है।

यहाँ से 60 किमी दूर स्थित शाहबाद हाकी अकादमी के कोच बलदेव ने कहा, 'यह हमारे लिए गौरवपूर्ण लम्हा है। इस जीत से निश्चित तौर पर लड़कियों का मनोबल बढ़ेगा और वे इससे भी बेहतर करने के लिए प्रेरित होंगी।' — **जनसत्ता से साभार**

रवि मसाले की ओर से
स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

Ravi Pickle & Spices India Pvt. Ltd.
Plot No. P-37, Service Industries, Cidco, Aurangabad-431 210.
Tel : +91-240-2480544 / 2240160, Telefax : +91-240-2485544. E-Mail : sales@ravimasale.com

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ
मराठवाड़ा सेन्ट्रल को. ऑप. कंज्यूमर्स सोसायटी लि.
'यश' 1 बी. सी. 5, टाऊन सेन्टर, एन–1,
सिडको, औरंगाबाद–431003
संस्था की विशेषताएँ
- ग्राहक को रोज लगने वाली जीवनोपयोगी चीजों का वितरण।
- राज्य में शासकीय तथा निमशासकीय कार्यालयों को लगने वाली चीजें – स्टेशनरी, कपड़ा, कटलरी, अनाज इत्यादि चीजों का वितरण।

श्री जगदीशचंद्र सूर्यवंशी
अध्यक्ष
तथा सभी संचालक मण्डल
श्री संतोष कौतीकराव चौधरी, श्री फूलचन्द्र जैन, श्री सुधाकर जाधव, श्री रामेश्वर सोनवणे, श्री महेन्द्रकुमार मुथा, श्री सुधीर जोशी, श्री सुवर्णकार, श्री संजय भारुका, श्री रफीकभाई, श्रीमती अनुप्रिया तांबोली, श्री निकेत जेधे, श्री काशीनाथ मिरगाले, श्री शिवराज खटके।

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका देखकर तथा पढ़कर अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका को आकर्षक तथा ज्ञानवर्धक बनाने का यह सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका के माध्यम से देश में रह रहे पिछड़े वर्ग तथा सताये गये व्यक्तियों के बारे में जानकारी तथा उनकी उन्नति के सुझाव दर्शाये जाते हैं, इसके अतिरिक्त यह पत्रिका आमजनों में प्रेम, शांति, सौहार्द और विश्व बन्धुत्व की भावना बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनायें।

— डॉ. रमेश कुमार शर्मा, कोटा

इस पत्रिका में विचारों की अथाह पूँजी है इसको हम स्वयं पढ़ते हैं तथा अन्य व्यक्तियों को भी पढ़ने के लिए देते हैं जिससे अधिक से अधिक लोग इस पत्रिका को पढ़ें तथा अपने विचारों को परिवर्तित कर देश तथा समाज से प्रेम करें एवं आर्य समाज को आगे बढ़ाये। हम चाहते है कि देश के कोने–कोने में इस प्रकार के विचार फैलाये जायें। धन्यवाद।

— राजेन्द्र राय, पूर्वी चम्पारण, बिहार

11 से 17 जुलाई का वैदिक सार्वदेशिक प्राप्त हुआ इसमें स्वामी अग्निवेश जी का लेख प्रकाशित किया गया है जो अत्यन्त प्रेरणा दायक है इससे पूर्व भी इस लेख का प्रथम भाग पिछले अंक में प्रकाशित हुआ है जो मुझे नहीं मिला अतः एक प्रति मुझे भिजवाने की कृपा करें। स्वामी जी का यह लेख मस्तिष्क को झकझोर कर धर्म के बारे में नये तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करता है। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका ऐसे ही जीवन के विभिन्न आयामों से परिचित कराती रहेगी।

— प्रवीन आर्य, मण्डावली, दिल्ली

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : *sarvadeshik@yahoo.co.in* वैबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com*

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।